

अजीबोगरीब क्रिस्टल

होलगर पुस्तक



अजीबोगरीब किश्कै

होलगर पुक

हिन्दी रूपान्तर : मीनाक्षी
आवरण एवं रेखांकन : रामबाबू



अनुराग ट्रस्ट

हिन्दी की भाषाशास्त्र

कृष्ण शर्मा

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : 15 रुपये

पहला हिन्दी संस्करण 2003

पुनर्मुद्रण : अगस्त, 2008

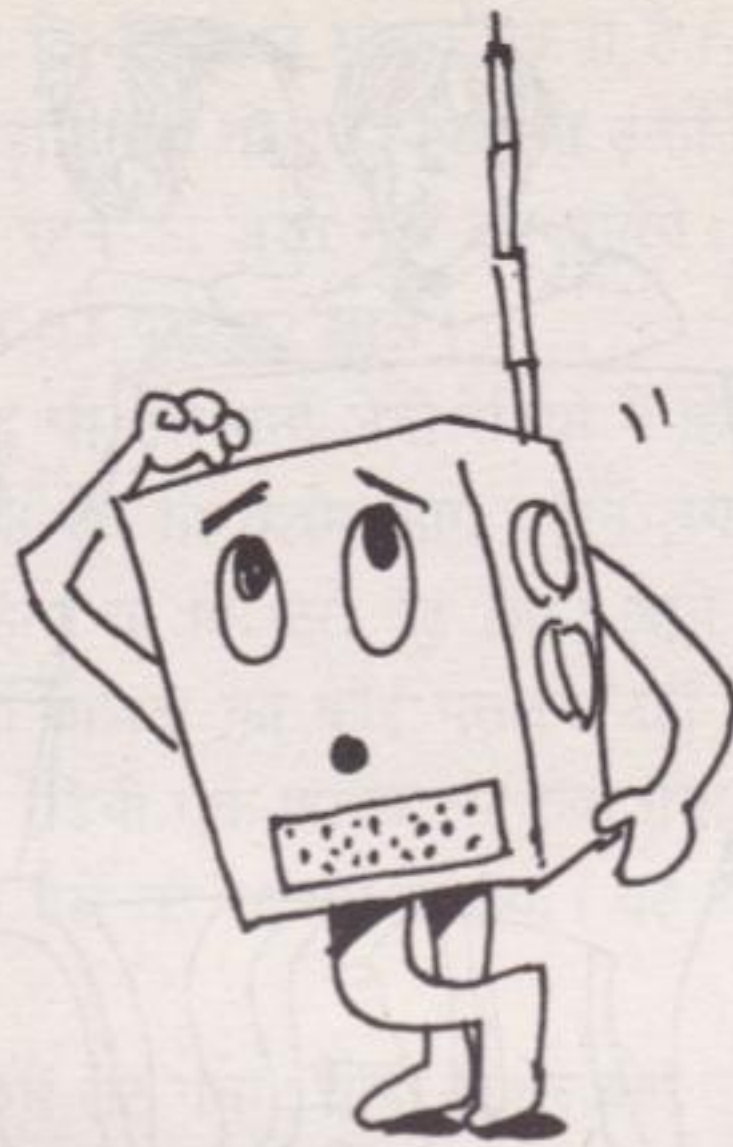
प्रकाशक

कृष्ण शर्मा

डी - 68, गिराला नगर

लखनऊ - 226020

लेजर टाइप सेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फाउण्डेशन
मुद्रक : क्विण्टिन प्रिण्टर्स, 628/एल-28, शक्तिनगर, लखनऊ



जेबी रेडियो और संधमारों की टोली

किसी समय एक तेज-फुर्तीला जेबी रेडियो हुआ करता था, जो काफी दिनों से इस बात पर सोच-विचार करता रहता कि किस प्रकार लोगों के अधिक से अधिक काम आया जा सके। वह अक्सर ही अपने एरियल की मदद से कुछ लोगों को दुष्टतापूर्ण योजनाएँ बनाते संयोग से सुन लेता। और फिर हर किसी को इसकी जानकारी देने के लिए वह बेताब हो उठता। क्योंकि तब सभी भले और सज्जन लोग इस बात से वाकिफ हो जायेंगे कि उन्हें किन लोगों पर नज़र रखनी है।

इसी प्रकार के विचारों से उस नन्हें जेबी रेडियो का दिमाग भरा रहता। और एक दिन जब उसका मालिक उसे बागीचे की बेंच पर भूल से छोड़कर चला गया तो जेबी रेडियो नीचे कूदा और सैर-सपाटा करने निकल पड़ा।

वह बिना किसी कठिनाई के पार्क में पहुँच गया सिवाय इसके कि झबरे कुत्ते ने सूँ-सूँ करते हुए उसका टोह लेना चाहा था। पर जेबी रेडियो ने अपना एरियल घुमाया और कुत्ते की नाक पर तड़ाक से एक तमाचा जड़ दिया। कुत्ता डर गया और दुम दबाकर भाग खड़ा हुआ।

पार्क के अन्दर नन्हा जेबी रेडियो फूलों के झुरमुट के बीच आसन लगाकर आराम से जम गया, अपने एरियल को ऊपर उठाया, और बेहतर तरीके से सुन सकने के इरादे से उसे चारों दिशाओं में घुमाया। समय गुजरता गया परन्तु एरियल किसी दुष्टतापूर्ण बातचीत को पकड़ न सका। कोई अपने मित्र के जन्मदिन की बात करता, कोई दूसरा अपने नये मकान की तारीफ कर रहा होता तो कोई तीसरा सैर पर जाने की योजना बनाता।

अचानक नन्हें जेबी रेडियो को लाइलैक झाड़ी के किनारे वाली बेंच पर बैठे और कानाफूसी



करते हुए दो लड़के नजर आये। उसने उनमें से एक को यह कहते सुना, “कल हमारा गणित का इम्तहान है। चलो कल हम स्कूल से फाँकी मारते हैं। ऐसा करें कि हम झूलाघर चलेँ और चक्कर-झूले की सवारी का मजा लें।”

दूसरा लड़का जवाब में बोला :
 “हाँ, ठीक है चलो ऐसा ही करते हैं! तब हमें कल के लिए मिला गृहकार्य भी करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।”

और तब लड़कों ने हाथ मिलाकर अपने समझौते पर मुहर लगायी।

तुरन्त ही जेबी रेडियो अपने अधिकतम सम्भव ऊँची आवाज में चिल्लाने लगा—

“सुनिये! सुनिये! लाइलैक झाड़ी के निकट वाली बेंच पर बैठे दो लड़के कल स्कूल से रफूचक्कर होने की योजना बना रहे हैं। सुनिये! सुनिये! कल दो लड़के स्कूल गोल करने वाले हैं।”

लड़के ऐसे उछलकर खड़े हो गये मानो बेंच में आग लग गयी हो। वे डरकर फटी-फटी आँखों से चारों ओर देखने लगे। बेशक वे उसे नहीं देख सके जिसने उनकी गुप्त योजना का पर्दाफाश कर दिया था। परन्तु किसी मुसीबत से बचने के लिहाज से वे हड़बड़ी में भाग खड़े हुए।

“बहुत खूब!” नन्हा जेबी रेडियो सन्तुष्ट था। “वे बहुत दूर तक नहीं जा पायेंगे। लोग उन्हें निश्चित ही रोक लेंगे और उन्हें अच्छी झाड़ पिलायेंगे।”

परन्तु ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। पार्क में चहलकदमी करते लोगों ने जब जोर से बोलने की यह आवाज सुनी तो उन्होंने अकबकाकर इधर-उधर देखा, अपने कन्धे उचकाये और अपने-अपने रास्ते

चल दिये। उन्होंने सोचा होगा कि किसी ने मजाक किया है।

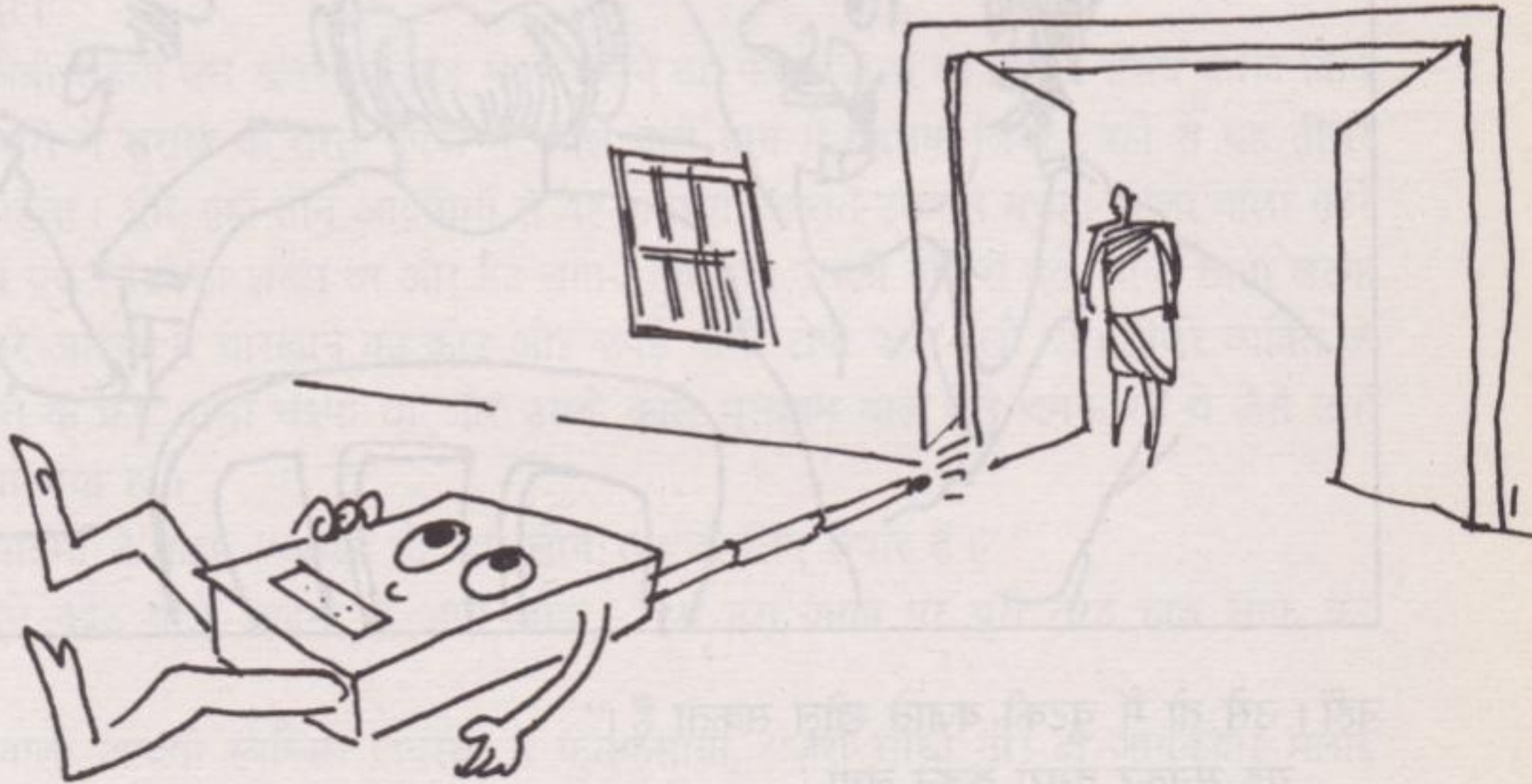
हमारे जेबी रेडियो जी थोड़ा हताश तो हुए। फिर भी उन्होंने अपने को यकीन दिलाया कि लड़के अगले दिन स्कूल से गैरहाजिर रहने की जुरत नहीं कर पायेंगे। यह भी हो सकता है कि वे घर चले जायें और स्कूल से मिले काम को पूरा कर डालें।

पहली असफलता के बाद भी उस नन्हें जेबी रेडियो ने हिम्मत नहीं हारी। वह फूलों की क्यारी से बाहर सरक आया और फूँक-फूँककर कदम आगे बढ़ाने लगा। नन्हें रेडियो को चौकन्ना ही रहने की ज़रूरत थी। वह नहीं चाहता था कि उसे ढूँढ़ लिया जाये और गुमशुदा सामानों के विभाग में पहुँचा दिया जाये। तब उसकी योजना का कोई मतलब नहीं रह जाता।

चलते-चलते हमारा जेबी रेडियो एक फाटक पर रुक गया और उसके पीछे वाले अहाते में धीरे से खिसक आया ताकि अपने पैरों को आराम दे सके। वह चलने का अभ्यस्त नहीं था और उसे थकान लग रही थी।

नन्हा जेबी रेडियो अहाते में लेट गया। थोड़ी ही देर बाद उसका एरियल किसी आदमी की धीमी घरघराती-सी आवाज़ पकड़ने लगा जो यह कह रहा था :

“मैं एक भीषण रूप से बड़ा चाकलेट का डिब्बा चट कर सकता हूँ।”



दूसरी आवाज़ ने जवाब दिया, “भीषण, बड़ा चट करना... कितनी बार मैं तुम्हें बताऊँ कि ढंग से बात किस तरह की जाती है। परन्तु...पर सच्ची बात कहूँ तो लगभग दो किलो का अखरोटवाला चाकलेट मैं खुद ही खा सकता हूँ...”

एक तीसरी आवाज़ भी उसमें आ मिली, “और मुझे, मेरे प्यारे दोस्तो, दो बड़े-बड़े मलाई केक का खुशहाल मालिक बनने पर कोई एतराज़ नहीं होगा।”

तब उस पहली, वही धीमी घरघराने वाली आवाज़ ने सुझाव रखा,

“बहुत अच्छे, चलो आज रात हम “ब्रून” में घुसते हैं। उस घटिया से ताले का हमें कोई डर



नहीं। उसे तो मैं चुटकी बजाते खोल सकता हूँ।”

यह सुनकर दूसरा कहने लगा,

“तुम जिस ढंग से बात कह रहे हो उसे सुनकर तो मुझे थरथरी छूटने लगी है। खैर, मैं तुम्हारे प्रस्ताव से सहमत हूँ।”

तीसरे ने चटकारा भरते हुए बात जोड़ी, “ओह, मेरे प्यारो! मैं तो सुबह से ही दो बड़े-बड़े

ज़ायकेदार मलाई केक के सपने देखता रहा हूँ। जल्दी से वह खुशनुमा घड़ी आ जाये...”

वह नन्हा जेबी रेडियो अच्छी तरह समझ चुका था कि क्या चीज़ घटने वाली है और वह गला फाड़कर चिल्लाने लगा,

“सुनिये! सुनिये! यहीं कहीं आसपास तीन आदमी आज रात ताला तोड़कर “ब्रून” में घुसने और चाकलेट व केक चुराने का षडयंत्र रच रहे हैं। सुनिये! सुनिये! यहीं कहीं आस-पास.....”

वह बार-बार इस चेतावनी को दुहराता रहा। सड़क की पटरी पर स्त्रियों और पुरुषों के जूतों का ठिठकना वह सुन रहा था। अहाते की ओर मुँह की हुई खिड़कियाँ खुल चुकी थीं और लोग अपना सिर बाहर निकालकर अचरज से चारों ओर देख रहे थे।

“सुनिये! सुनिये!” नन्हा जेबी रेडियो का आवाज़ लगाना जारी रहा।

तब फाटक को ठेलकर खोल दिया गया और कुछ लोग उस शोर मचाने वाले जेबी रेडियो के इर्द\गिर्द इकट्ठा हो गये।

“रेडियो पर कोई मूर्खतापूर्ण नाटक चल रहा लगता है!” एक झुकी कमर वाले बूढ़े ने कहा। उसने अपने कन्धे उचकाये और पैर घसीटता सड़क पर वापस आ गया।

दूसरों ने भी सहमति में सिर हिलाया और उसके पीछे-पीछे निकल आये।

“ईदू, ईदू, कहाँ हो तुम? फाटक पर क्या तुम्हारा रेडियो पड़ा हुआ है?” खिड़की में से किसी ने आवाज़ दी।

नन्हा जेबी रेडियो उस खतरे को ताड़ गया जिसमें वह फँसने वाला था। बिना समय बर्बाद किये वह चहारदीवारी में सुराख के रास्ते चुपके से बगल वाले बाग में खिसक लिया। वहाँ से वह तीसरे बाग में जा पहुँचा। और यहाँ तीन आदमियों से वह लगभग टकराते-टकराते बचा। पहला वाला गहरे रंग के सूट में एक मोटा-सा शख्स था और हैट लगाये हुये था। उसकी बाँह से एक लम्बा छाता लटक रहा था। दूसरे आदमी ने चारखाने का कोट और कपड़े वाली टोपी पहन रखी थी। तीसरे व्यक्ति के नाक पर धातु के फ्रेम वाला चश्मा था और उसके काले मुलायम बाल ऐसे चमक रहे थे जैसे उन्हें पालिश किया गया हो।

मोटे आदमी ने कहा, “अच्छा तो, हम लोग रात के लिए तैयार हैं।”

चारखाने कोट वाले आदमी ने आगे जोड़ा, “हम उस जगह पर पूरी तरह हाथ साफ कर जायेंगे।”

चश्मे वाला आदमी स्वप्निल अवस्था में फुसफुसाया, “ज़रा सोचो तो! दो ज़ायकेदार मलाई केक।”

नन्हा जेबी रेडियो फौरन समझ गया कि वह उन आदमियों के रूबरू खड़ा है जिनको उसने कुछ देर पहले बात करते सुना था।

वह क्या करे? क्या वह एक बार फिर सुनो! सुनो! की आवाज लगाये? लेकिन फिर रेडियो ने ऐसा न करने का फैसला लिया। उसकी घोषणा को एक बार फिर एक विचित्र-सा रेडियो नाटक मान लिया जायेगा। लोगों को अभी जेबी रेडियो के खुद से ही चलते-फिरते और बात करते देखने की आदत नहीं पड़ी है।

“मुझे खुद ही इन लुटेरों को रोकना होगा,” जेबी रेडियो ने पल भर भी झिझके बिना यह फैसला ले लिया। “मुझे यकीन है कि मैं इसे सम्भाल लूँगा,” उसने आत्मविश्वास के साथ सोचा।

वे आदमी सड़क पर मटरगश्ती करने चल दिये। नन्हा जेबी रेडियो आराम करने और अपनी योजनाएँ बनाने के लिए बिच्छू-बूटी के झुरमुट में सरक गया।

“छिपने की यह एक सुरक्षित जगह है,” उसने सन्तोष के साथ सोचा। “किसी को भी यहाँ आने और ताक-झाँक करने की हिम्मत नहीं पड़ेगी। परन्तु बिच्छू-बूटी मुझे तो डंक मार नहीं सकती।”

जब शाम का झुटपुटा फैल गया तो हमारा नायक जैसे-तैसे धींगामुश्ती करते बाहर निकला और ‘ब्रून’ की दिशा में चल दिया।

रास्ता भूल जाने का कोई डर नहीं था क्योंकि हाल ही में खुली बेकरी की दुकान, ‘ब्रून’, का उसे दर्जनों बार विज्ञापन करना पड़ा था।

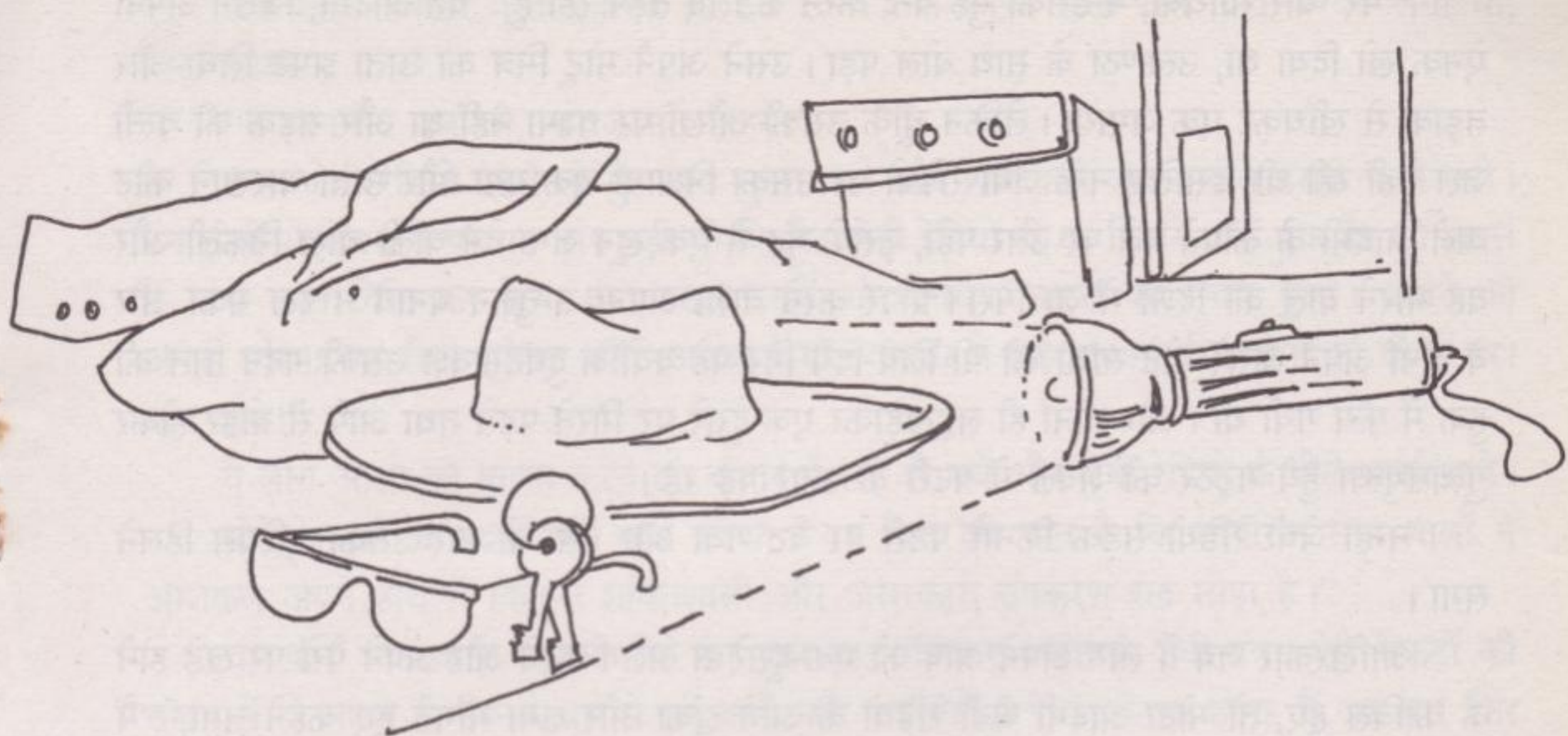
हरे और लाल रंगों वाला एक नियॉन नाम पट्ट प्रवेशद्वार के ऊपर जगमगा रहा था। दरवाजे के सामने दिन जैसा प्रकाश था।

“वे ताला तोड़ने की हिम्मत यहाँ शायद ही करें,” जेबी रेडियो उस चारखाने कोट वाले आदमी की बात याद करते हुए, सोच रहा था।

दुकान का पिछला दरवाजा एक सँकरे आँगन में स्थित था। दरवाजे के निकट खाली डिब्बों की ढेरी पड़ी हुई थी। हमारा नायक किसी तरह चढ़कर बिल्कुल तली वाले डिब्बे में पहुँच गया और वहाँ बैठकर इन्तजार करता रहा।

जल्दी ही उसे पिछवाड़े वाले दरवाजे की तरफ बढ़ते दबे कदमों की आवाज सुनाई दी। अँधेरे से तीन मूर्तियाँ, चौकन्नेपन के साथ अपना रास्ता टटोलते, नमूदार हुईं। टार्च से निकली रोशनी की किरणें दरवाजे पर फैल गयीं और एक भारी-भरकम भूरे से ताले को ढूँढ़ निकाला। एक काले दस्ताने वाले हाथ ने उसे उतावलेपन से थाम्ह लिया। तब दूसरा हाथ ताले की तरफ बढ़ा। उसने धातु से बनी ताली का गुच्छा पकड़ रखा था, जिसमें छोटी-बड़ी तमाम चाभियाँ लटकी हुई थीं।

“सुनिये! सुनिये,” नन्हा जेबी रेडियो अचानक चिल्लाने लगा। “ठीक इसी वक्त तीन व्यक्ति पिछले दरवाजे के रास्ते से ‘ब्रून’ में घुसने की कोशिश कर रहे हैं। सुनिये! सुनिये! ठीक इसी वक्त तीन व्यक्ति पिछले दरवाजे...”



“अरे! हाय! ओह!” दरवाजे पर उठा-पटक की आवाज सुनाई दी। टार्च नीचे गिर गया था और जमीन पर पड़े कपड़े की टोपी, ताली के गुच्छे, हैट और धातु वाले फ्रेम की ऐनक पर रोशनी फेंके जा रहे थे।

उनके मालिक घटनास्थल से चम्पत हो चुके थे।

“वह मारा!” नन्हा जेबी रेडियो खुशी से भर उठा और भगोड़ों के पीछे खुशमिजाजी के साथ सीटी बजाता हुआ भागा।

सड़क किनारे चौड़ी पटरी को चीरते हुए वे तीन आदमी और उनके ठीक पीछे लगा हुआ नन्हा जेबी रेडियो ये सभी मिलकर वाकई एक विचित्र टोली बना रहे थे। और वह पूरी सड़क जेबी रेडियो की भोंपू जैसी आवाज से गूँज रही थी,

“सुनिये! सुनिये! ये तीन आदमी जिन्होंने अभी-अभी ‘ब्रून’ में सेंध मारने की कोशिश की थी अब यहाँ से भागे जा रहे हैं। सुनिये! सुनिये!...”

छाते वाला मोटा आदमी, जो समूह का अगुवा था सुस्त पड़ गया, उसका दम फूलने लगा था। उसने एक नजर अपने पीछे डाला और हाँफते व जोर-जोर से साँस लेते हुए बड़बड़ाया, “रुक जाओ, यारो! यह...यह...महज...एक...डिब्बा है...”

तीनों तेज धावक इतने झटके से रुके कि हमारा नन्हा जेबी रेडियो उनसे लगभग टकराते-टकराते बचा।

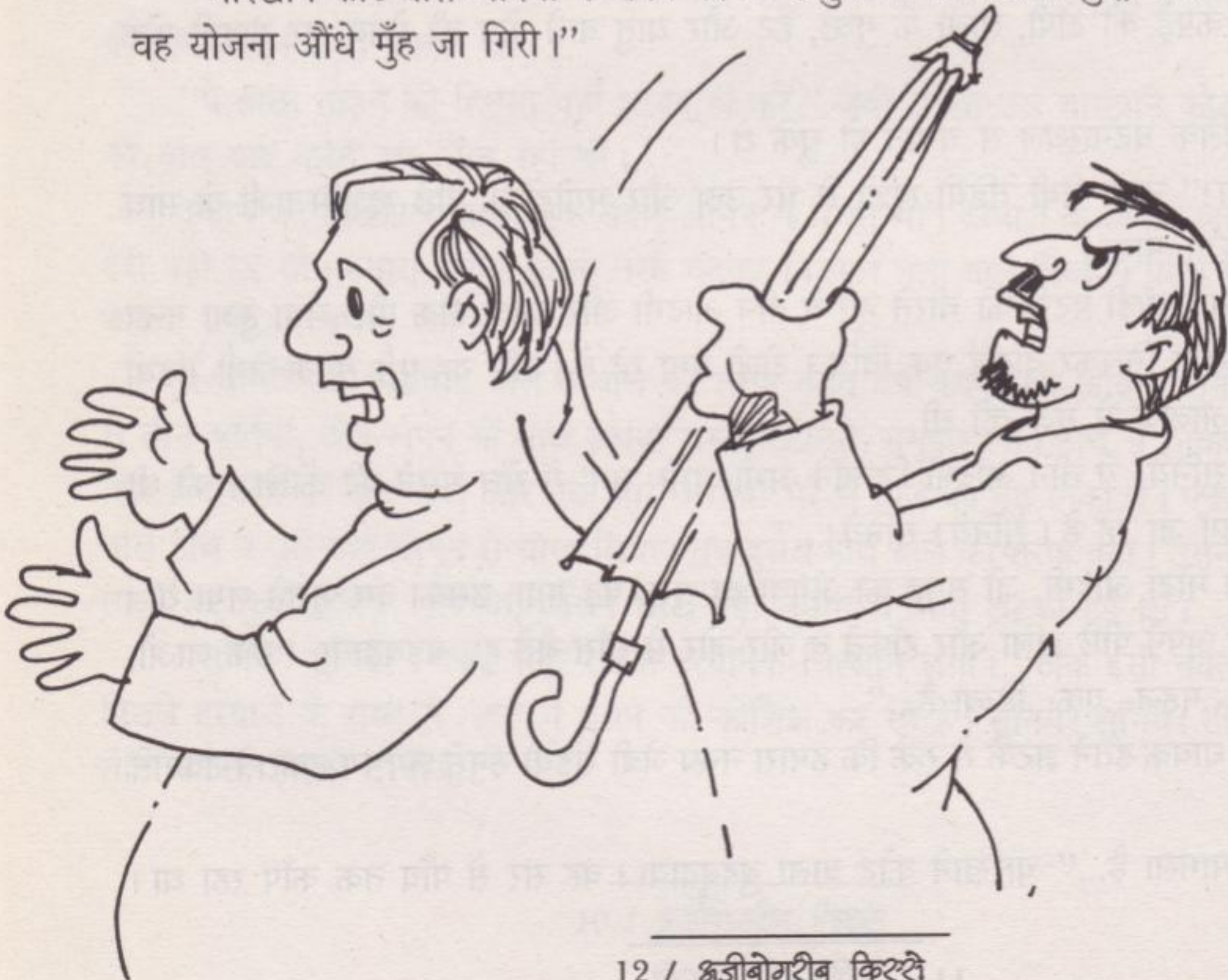
“तो यह मामला है...” चारखाने कोट वाला बुदबुदाया। वह सर से पाँव तक काँप रहा था।

“मेरे प्यारे साथियो, मैं इसका मुँह बन्द करने के लिए तड़प रहा हूँ,” वह आदमी, जिसने अपना ऐनक खो दिया था, उत्कण्ठा के साथ बोल पड़ा। उसने अपने मोटू मित्र का छाता झपट लिया और तड़ाक से खींचकर एक जमाया। लेकिन चूँकि उसकी आँखों पर चश्मा नहीं था और सड़क की बत्ती जल नहीं रही थी, इसलिए नन्हे जेबी रेडियो पर उसका निशाना चूक गया और छाता चारखाने कोट वाले आदमी के काँपते पंजे पर उतर पड़ा, उसके मुँह से एक खून जमा देने वाली चीख निकली और वह मारने वाले की दिशा में जा गिरा। प्रहार करने वाला अपना सन्तुलन बनाये न रख सका और वे दोनों अपने तीसरे मोटे साथी को भी लिये-दिये गिर पड़े क्योंकि दुर्घटनावश उसकी गर्दन छाते की हुक में फँस गयी थी। और तीनों ही लड़खड़ाकर एक-दूसरे पर गिरते-पड़ते तथा आपे से बाहर होकर गुत्थमगुत्था हुये गट्ठर की शक्ल में पटरी के ऊपर पड़े रहे।

नन्हा जेबी रेडियो सड़क किनारे पटरी पर बैठ गया और हँसी के मारे उसका एरियल हिलने लगा।

आखिरकार जब वे लोग अपने आप को एक-दूसरे से अलग करने और अपने पैरों पर खड़े होने के काबिल हुए, तो मोटा आदमी जेबी रेडियो के आगे झुका और क्षमा माँगते हुए कहने लगा, “मैं माफी चाहता हूँ, मुझे गहरा दुख है कि हमने आपको चोट पहुँचाने की बात भी सोची।”

चारखाने कोट वाले आदमी ने अपने पैर की अँगुलियों को सहलाते हुए, आगे जोड़ा, “सचमुच, वह योजना औंधे मुँह जा गिरी।”



और चिकने बालों वाला व्यक्ति जो इस समय तक काफी लस्त-पस्त दिखायी देने लगा था, गिड़गिड़ाया—

“हे माननीय यंत्र जी, नाराज मत होइये!”

नन्हा जेबी रेडियो पहले तो मुँह बाये सुनता रहा और फिर कहीं जाकर बात उसके पल्ले पड़ी। उन तीनों से सेंधमारों पर यह छाप पड़ी थी कि यह जेबी रेडियो ही था जिसने उन्हें एक ढेर की शक्ति में चारों खाने चित्त कर दिया था। इससे उसमें और अधिक साहस का संचार हुआ। बोलने की अपनी स्वाभाविक शैली भूलकर उसने आदेश दिया, “कतार में खड़े हो! नागरिक सेना की चौकी पर! कूच करो!”

वे लोग आज्ञा का पालन करते हुए कतार में खड़े हो गये और जेबी रेडियो के पीछे चलने लगे।

मोटे आदमी ने उदासी के साथ सोचा, “यह हैरत की बात है कि नागरिक सेना वालों ने आजकल अपने हाथ में कितना शक्तिशाली और असरकारी उपकरण रख छोड़ा है।”

चारखाने कोट वाला आदमी रोब खा गया था, “कितना भयानक जेबी-यंत्र। ऐसे सैकड़ों की संख्या में हो सकते हैं, जिनके बारे में हमें कभी पता तक नहीं चलेगा। बेहतर होगा, मैं एक बार फिर से एक ईमानदार तालासाज बन जाऊँ।”

और वह चिकने, पर अब उलझे, बालों वाला व्यक्ति सोच-विचार करने लगा, “अब इसके सिवाय हमारे पास कोई और चारा नहीं बचा कि हम नये सिरे से एक ईमानदार आदमी की तरह जिन्दगी शुरू करें।”

मोटा आदमी अपनी राह चलते-चलते एकाएक रुक गया और विनती करने लगा,

“ओह, महामहिम! हमें गिरफ्तार मत कीजिये! अगर आप इस बार हमें छोड़ दें तो हम अपनी जिन्दगी में फिर कभी भी कोई गलत काम नहीं करेंगे। हम वादा करते हैं।”

बाकी दोनों भी इसमें शामिल हो गये, तथा और भी अधिक दयनीय ढंग से याचना करने लगे। उनकी दुखपूर्ण विनती ने नन्हे जेबी रेडियो की बैटरी व तारों को कृपालु बना दिया और उसने कहा, “अच्छी बात है! अब चलते बनो! लेकिन अपने वादे को याद रखना, नहीं तो...”

अगले ही पल वे जा चुके थे। पटरी पर बस छाता पड़ा रह गया था। मोटा आदमी उसे हड़बड़ी में छोड़ गया था। नन्हे जेबी रेडियो ने उसे हल्का-सा धक्का दिया। छाता आश्चर्यजनक रूप से भारी था! पास से देखने-परखने पर, पता चला कि कपड़े के सलवटों में लोहे का एक मोटा डण्डा छुपा हुआ था। वह कोई असली छाता नहीं बल्कि छद्मभेष में मुद्गर था।

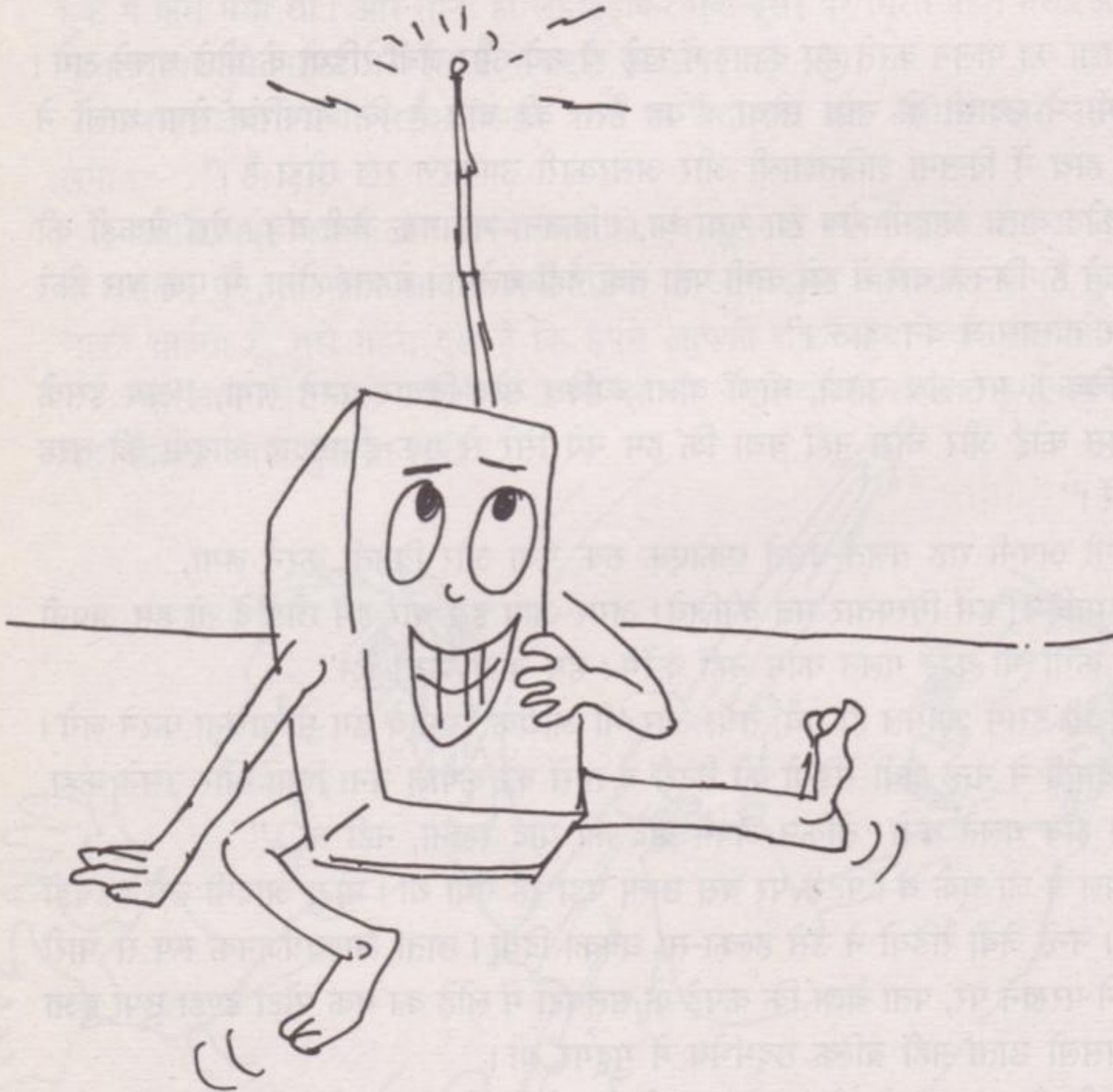
“बेचारी उँगलियाँ!” चारखाने कोट वाले आदमी के बारे में सोचते हुए जेबी रेडियो ने निःश्वास छोड़ा।

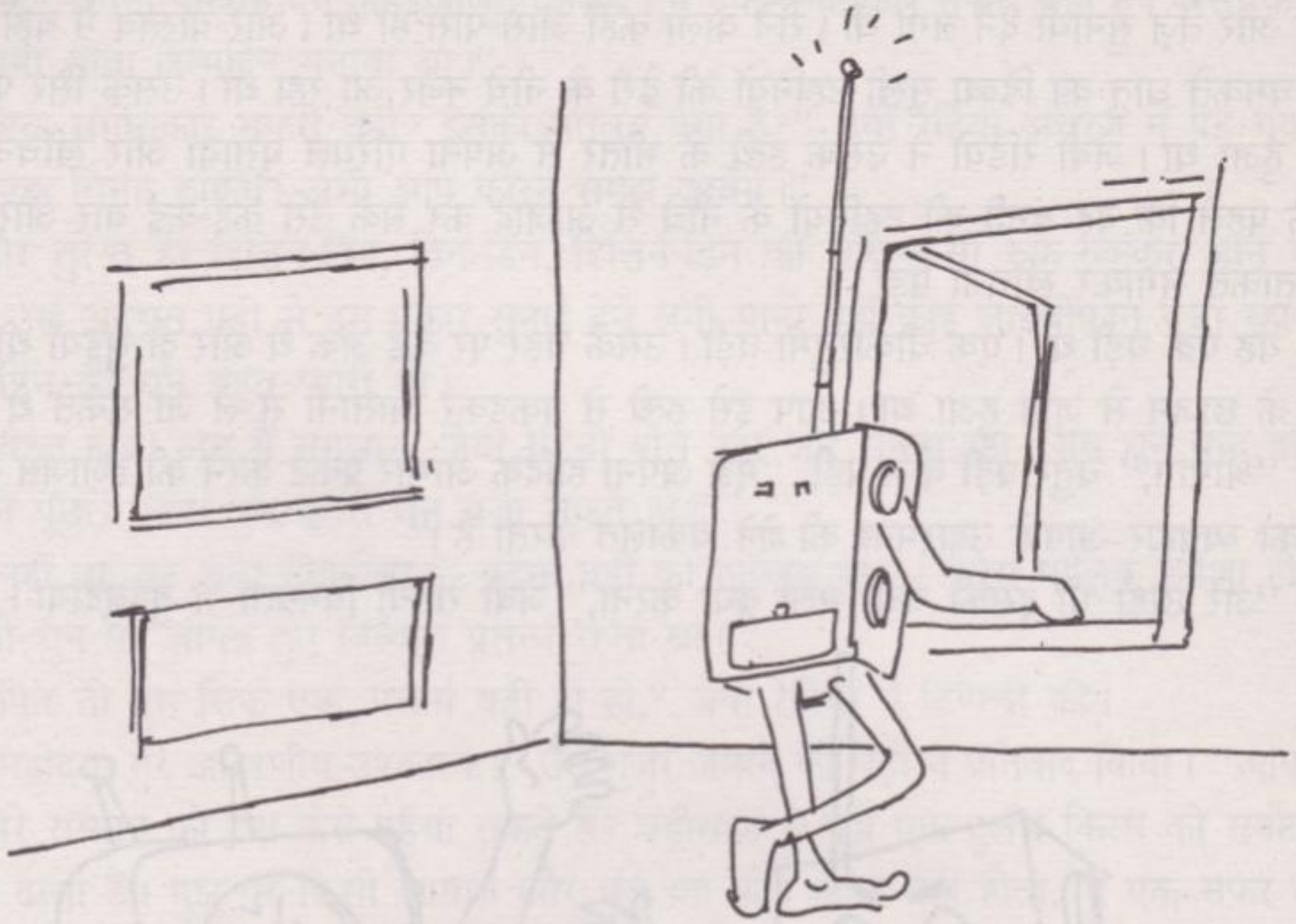
पॉप गाने की धुन पर सीटी बजाते हुए हमारा नायक मुड़कर पार्क की ओर चल दिया।

ऐसी कड़ी मेहनत वाले दिन के बाद उसे आराम की बेहद जरूरत थी। जल्दी ही एक नये दिन की शुरुआत होने वाली है और नया काम, जैसा कि मोटे आदमी ने शायद कहा होता, पूरा होने की राह ताक रहे हैं।

चिकने बालों वाले आदमी ने आगे यह जोड़ा होता, “अरे, प्यारे पाठक, उस तूम-तड़क यंत्र से सावधान रहो!”

और चारखाने का कोट पहने आदमी ने इसकी पुष्टि की होती, “एक अलौकिक यंत्र! चाकलेट के प्रति तुम्हारी लालसा को हमेशा के लिए छीन लेता है!”





जेबी रेडियो और सफरी घड़ी

नन्हा-सा जेबी रेडियो खिड़की के दहलीज पर अड्डा जमाये बाहर अहाते की ओर देख रहा था। पेड़ों की पत्तियाँ झड़ चुकी थीं, सर्दियों का उन्हें इन्तजार था। खिड़की से बहुत दूर नहीं, पतझड़ के सुनहरे पत्तों का विशाल ढेर पड़ा हुआ था। सूरज में अभी भी गर्मी थी और खिड़की पूरी तरह से खुली हुई थी।

अकस्मात ही जेबी रेडियो ने मदद की गुहार लगाते करुणा से भरी एक कमजोर-सी आवाज सुनी। यह एक अजीब आवाज़ थी जिसे सिर्फ एक जेबी रेडियो ही सुन सकता था।

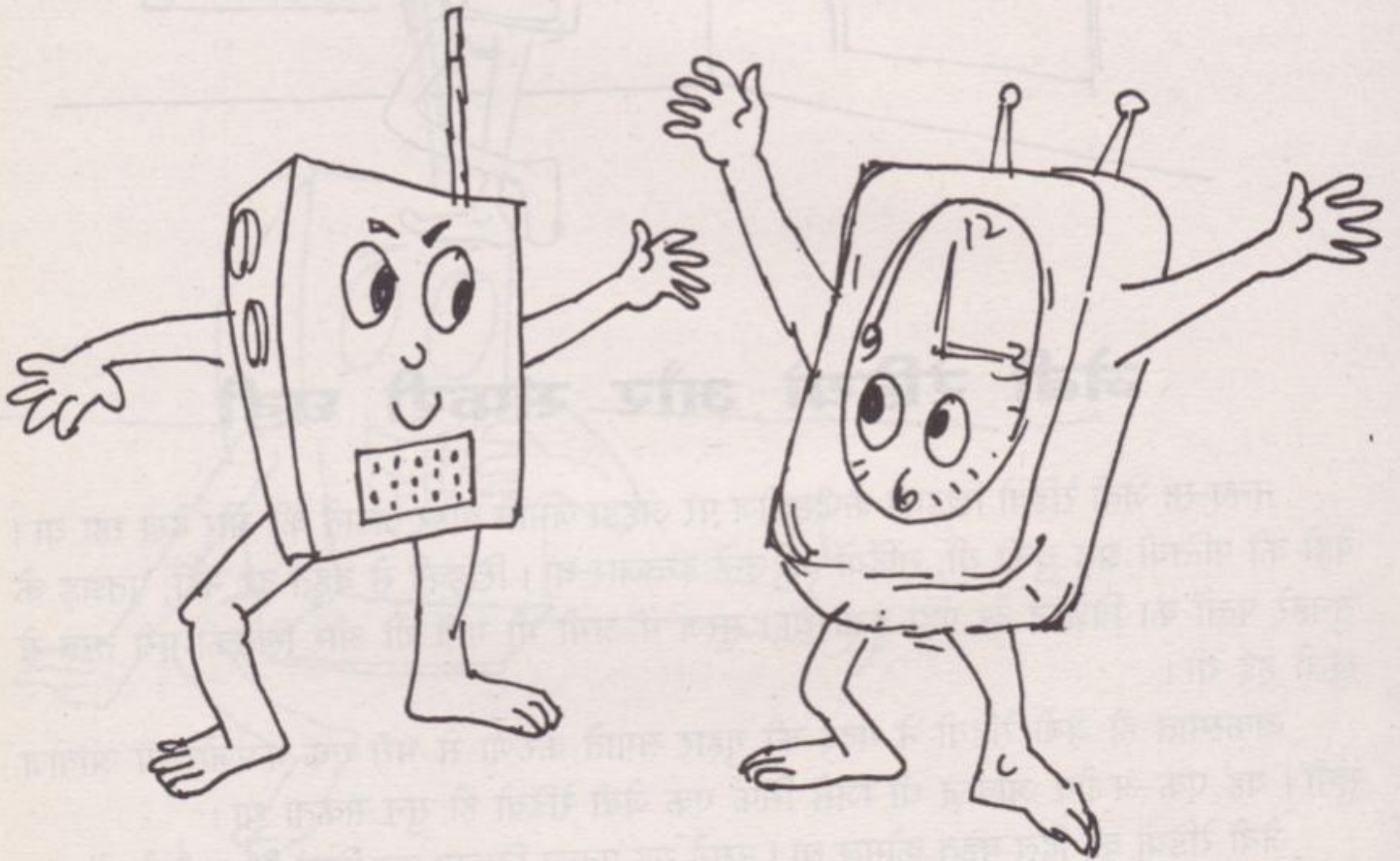
जेबी रेडियो का दिल बहुत कोमल था। उसने यह पक्का निश्चय कर लिया कि मुसीबत में पड़ा शख्स चाहे जो भी हो उसकी मदद वह अवश्य करेगा। आहिस्ता-आहिस्ता करके वह खिड़की की दहलीज के बिल्कुल किनारे खिसक आया और अपने आप को सुनहरी पत्तियों के ढेर पर गिरा लिया। कुछ खींचातानी करने के बाद वह ढेर से ऊपर निकला और एक बार फिर से ठोस जमीन को अनुभव

किया। बिना विलम्ब किये उसने आवाज़ की दिशा में सरकना शुरू कर दिया। उसने अहाते को पार किया, बागीचे से गुजरा और सायबान के पिछवाड़े एक खंदक के किनारे आ पहुँचा। पीड़ाभरी पुकार थोड़ी और तेज़ सुनायी देने लगी थी। रोने वाला कहीं आस-पास ही था। और वास्तव में वहीं था वह एक चमकते धातु का डिब्बा सूखी टहनियों की ढेरी के नीचे नजर आ रहा था। उसके सिर पर हत्था लगा हुआ था। जेबी रेडियो ने उसके हत्थे के भीतर से अपना एरियल घुसाया और खींचने लगा। इसके पहले कि वह बन्दी को टहनियों के नीचे से आजाद कर सके उसे कई-कई बार और अपनी पूरी ताकत लगाकर खींचना पड़ा।

यह एक घड़ी थी। एक चौकोरनुमा घड़ी। उसके चेहरे पर कई अंक थे और दो सुइयाँ थीं। हत्था घड़ी के छाजन से जुड़ा हुआ था। आप इसे हत्थे से पकड़कर आसानी से ले जा सकते थे।

“श्रीमान,” चतुर घड़ी बोल पड़ी, “मुझे अपना हार्दिक आभार प्रकट करने की इज़ाज़त दीजिये! आपका व्यवहार आपके उदारमना की होने वकालत करता है।”

“अरे छोड़ो भी इसकी चर्चा भला क्या करना,” जेबी रेडियो विनम्रता से बुदबुदाया।



तब घड़ी अभिवादन में झुकी और सम्मानपूर्वक कहने लगी,

“मुझे अपना परिचय देने की इजाजत दीजिये। मैं एक संगीतकार सफरी घड़ी हूँ। परसों के दिन मैंने अपना सौंवा जन्मदिन मनाया था।”

“एक संगीतकार सफरी घड़ी? इसका मतलब क्या है?” जेबी रेडियो अचरज में पड़ गया।

“एक मिनट रुकिये! अभी आप फौरन समझ जायेंगे।”

और तुरन्त ही डिलिन-डिन, डिन-डिन, डिलिन-डिन की संक्षिप्त-सी रुक-रुककर आने वाली आवाजें उस अद्भुत घड़ी से इस प्रकार सुनाई देने लगीं मानो वहाँ कोई जाइलोफोन बजा रहा हो। डिलिन-डिन की धुन बहुत प्यारी थी।

“बहुत खूब! अब मैं समझा!” जेबी रेडियो बोल उठा और सुनता रहा। जब धुन बन्द हो गई तो उसने पूछा, “क्या तुम दूसरी धुन बजा सकते हो?”

“नहीं तो, वह भला किसलिए?” बुढ़ऊ घड़ी को ताज्जुब हुआ। “मेरा मालिक हमेशा ही इस प्यारी-सी धुन पर जागते हुए बिल्कुल प्रसन्न रहता था।”

“फिर तो तुम सिर्फ एक अलार्म घड़ी ही हो,” जेबी रेडियो ने टिप्पणी की।

“महोदय, मेरे आदरणीय उपकारक!” उस गुजरे जमाने की घड़ी ने प्रतिवाद किया। “आप इस प्रकार मेरे सम्मान को ठेस कैसे पहुँचा सकते हैं? घड़ीसाज ने मुझे एक दुर्लभ किस्म की सर्वोत्कृष्ट कृति में ढाला है। मुझ पर किसी आघात और धूल का कोई असर नहीं होता...मैं एक सफर करने वाली घड़ी हूँ। जब डाक-बग्घी किसी उबड़-खाबड़ सड़क पर मुझे झटका देती तो बिना किसी कठिनाई के मैं उसे झेल जाती हूँ।”

जेबी रेडियो को इसमें कोई विशेष बात नजर नहीं आयी। थोड़ा-बहुत झटका लगने पर भी उसे कोई खास आपत्ति नहीं होती। फिर उसने घड़ी से पूछा, “तुम यहाँ कैसे आ पहुँचे?”

“मैं एक अच्छीभली पेटी में लम्बे समय से पड़ी हुआ था, इस इन्तजार में कि मुझे फिर से सफर पर निकलना है। परन्तु आज एक नालायक नौजवान ने मुझे पेटी से बाहर निकाला और यहाँ फेंक दिया, जहाँ से निकलने में श्रीमान, आपने कृपापूर्वक मेरी मदद की,” घड़ी ने विस्तार से बताया और साथ ही जल्दी से यह भी जोड़ दिया, “यदि आप मुझे इजाजत दें तो क्या मैं यह पूछ सकता हूँ, मेरे उदार उपकारक, कि आप कौन हैं?”

नन्हे रेडियो ने वायु तरंगों व ट्रान्जिस्टर के बारे में बात की और यह बताया कि किस प्रकार उसका एरियल काफी दूरी से बातचीत और गीत-संगीत पकड़ लेता है। लेकिन सफरी घड़ी इसे समझ न सकी। उसे सिर्फ इस बात पर हैरत हो रही थी कि जेबी रेडियो अपने मालिक को जगाने का काम नहीं कर सकता था।

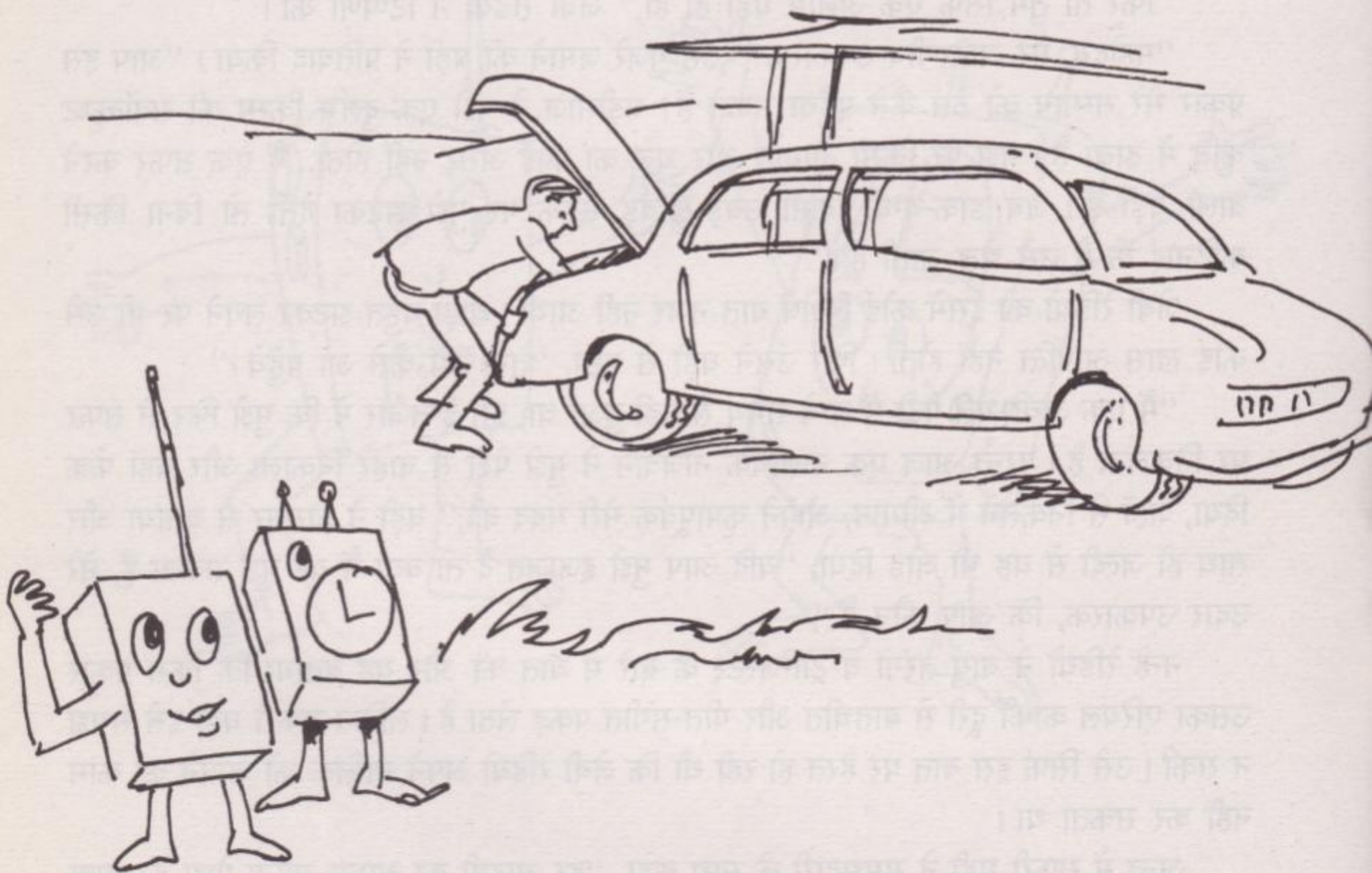
अन्त में सफरी घड़ी ने समझदारी के साथ कहा, “हर आदमी का अपना-अपना पेशा है! मुख्य

बात यह है कि वह अपना काम अच्छी तरह करे। आपका सहृदय व्यवहार यह बताता है कि आप एक उदारमना उपकरण हैं और सबसे महत्वपूर्ण चीज बस यही है। और अब श्रीमन, आपकी इजाज़त से मैं एक विनम्र निवेदन करना चाहती हूँ, कृपया, एक बार फिर से सफर पर जाने में मेरी सहायता कीजिये। यह हमेशा मेरी सबसे बड़ी चाहत और अभिलाषा रही है।”

जेबी रेडियो को यात्रा करने में कोई तुक नजर नहीं आया, क्योंकि वह तो पूरी दुनिया का समाचार घर बैठे ही पा लेता है। लेकिन अगर सफरी घड़ी ने यात्रा पर निकलने की ठान ही ली है तो वह सम्भवतः, मना नहीं कर सकता।

जेबी रेडियो ने अपना एरियल ऊपर की तरफ तान दिया, कान लगाकर सुनता रहा और तब जोर से बोल उठा, “चलो, चल दें।”

वे अपना रास्ता बनाते हुए बाग के बीच से गुजरे, झटपट अहाते को पार किया और गैराज के सामने खड़ी एक लाल रंग की कार के निकट आकर ठहर गये। गाड़ी का दरवाजा खुला हुआ था और चालक इंजन पर काम कर रहा था।



“चलो अन्दर बैठ जायें,” जेबी रेडियो ने निर्देश दिया।

वे किसी तरह अन्दर घुसे और पिछली सीट पर आराम से बैठ गये। डिब्बों और पेन्सिल के सामानों से वह भरा हुआ था, और उनके छुपने के लिए आदर्श जगह मुहैया करा रहा था। वे एक बड़ी-सी पेटी के ऊपर चढ़ने के बाद बस किसी तरह पिछली खिड़की से बाहर देख सकने की स्थिति में थे।

“कितनी अजीब बग्घी!” सफरी घड़ी को आश्चर्य हुआ। “लगता है घोड़े अभी अस्तबल में हैं। और भला उन्हें जोता कैसे जायेगा, मुझे बम तो दिखता नहीं?”

जेबी रेडियो हँसने लगा। “कौन से घोड़ों की तुम बात कर रहे हो? इसे मोटरकार कहते हैं। यह अपने से चलती है।”

“अच्छा, अच्छा! अब मैं समझी। लगता है यह स्वचालित वाहन है। जब मैं छोटी थी तो लोगों को एक दिन एक ऐसी ही सवारी गाड़ी बनाने की सम्भावनाओं पर बहस करते सुनती थी। वे इसमें सफल हो गये लगते हैं। लेकिन इसके पहले मुझे इसे देखने का अवसर नहीं मिल पाया था। मैं देखने के लिए अत्यन्त उत्सुक हूँ कि यह अपनेआप को खींचता कैसे है,” सफरी घड़ी खुशमिजाजी से चहक रहा था।

चालक स्टियरिंग पर जा बैठा, इंजन को चालू किया और लाल मोटरकार झटके से सड़क पर बढ़ चली। यह घुमाव पर इतनी तेजी से मुड़ी कि सफरी घड़ी एक तरफ को लुढ़क गयी।

“बाप रे! ऐसे जबर्दस्त ढंग का उछलना!”

सफरी घड़ी गुस्से से भुनभुनाया। जेबी रेडियो की सहायता से खुद को उठाकर वह बारह की ओर देखने लगा। पेड़, मकान, लोग बाग और दूसरे वाहन पलक झपकते ही गुजर जाते। सफरी घड़ी को मुश्किल से ही उनकी झलक मिल पाती थी। “यह घर कैसा...” वह कुछ पूछना शुरू ही करता, कि वे पीछे छूट चुके होते। इसलिए जेबी रेडियो किसी भी चीज के बारे में उसे ठीक ढंग से समझा नहीं पाया।

“यह कोई बहुत अच्छा नहीं है,” सफरी घड़ी बोल पड़ी। “ऐसी तेज रफ्तार से चलते हुए तुम कुछ भी अच्छी तरह से देख नहीं सकते।”

अचानक लाल गाड़ी सड़क के इस पटरी से उस पटरी और फिर उस पटरी से इस पटरी पर लहराने लगी। चालक को झपकी आ गयी थी। पिछली रात वह सो नहीं पाया था।

“अरे! घोड़े फिर से उछल पड़े! और...और यह गाड़ीवान अपनी गद्दी पर ऊँघ रहा है!” सफरी घड़ी भय से चिल्ला उठी।

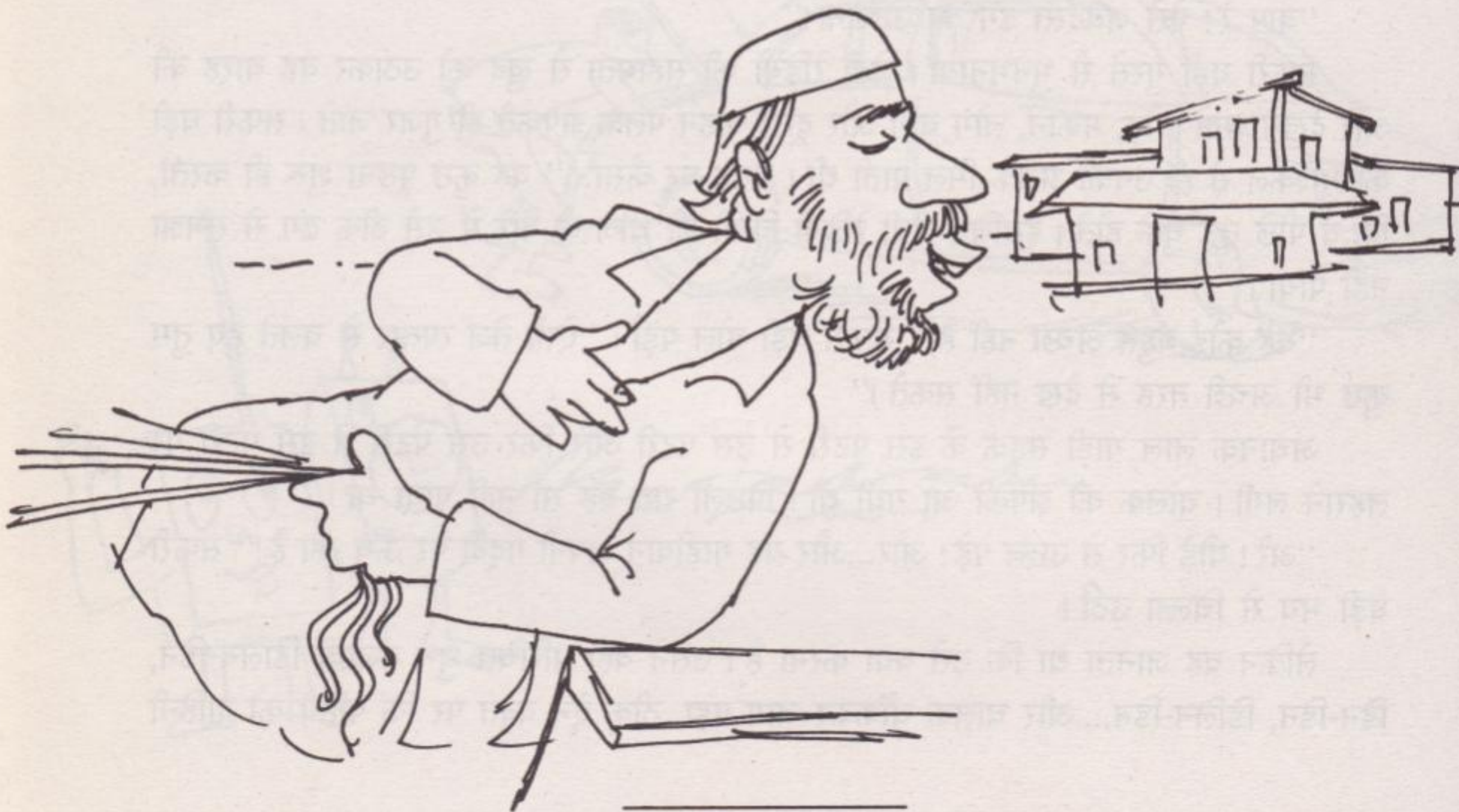
लेकिन वह जानता था कि उसे क्या करना है। उसने वही परिचित धुन बजायी डिलिन-डिन, डिन-डिन, डिलिन-डिन....और चालक चौंककर जाग पड़ा, ठीक ऐन वक्त पर कि पहिये को दाहिनी

ओर घुमाया जा सका। अन्यथा वे सभी अपने आप को खाई में पड़ा पाते।

“यह एक बहुत बढ़िया विचार था!” जेबी रेडियो ने आदर के साथ कहा।

“इस तरह के नालायक गाड़ीवान को कानून के हवाले कर देना चाहिए,” सफरी घड़ी बोल पड़ी, वह थोड़ी नाराज हो गयी थी।

दूसरे ही पल वह लगभग गर्व के भाव से बताने लगी, “मैं आपको बताती हूँ, मेरे आदरणीय साथी, कि मैंने कैसे एक बार अपने मालिक को डाकुओं के दल से बचाया था। हाँ तो घटना कुछ इस प्रकार घटी थी... मेरा मालिक बग्घी में सफर करते हुए कोने में बैठा ऊँघ रहा था। मैं खिड़की के पास खूँटी पर टँगी हुई थी। सड़क के दोनों ओर घना और अँधेरा जंगल था। अचानक मैं देखती क्या हूँ कि जंगल से निकलकर आदमियों का एक झुण्ड हमारे सामने आ गया और मार्ग को घेर लिया। गाड़ीवान ने रास इतनी जोर से खींचा कि घोड़े अपने पिछले पैरों पर खड़े हो गये। बग्घी झटके से रुक गयी। उन अजनबियों ने घोड़ों की लगाम पकड़ ली। अब मैं उन लोगों को नजदीक से देख सकता था। उनमें से एक आदमी की एक आँख पर काली पट्टी बँधी हुई थी दूसरे ने अपने दाँतों के बीच एक शिकारी चाकू पकड़ रखा था। वे लुटेरे ही थे, इसमें सन्देह की कोई गुंजाइश न थी। लेकिन मेरा मालिक अभी भी गहरी नींद में था। तब मैंने अपनी छोटी-सी धुन बजायी। अगले ही क्षण मेरा मालिक पूरी तरह से जाग उठा। वह, बेशक, यह समझ चुका था कि मामला क्या है। उसने



अपना पिस्तौल पकड़ा और...धॉय! वह यूँ चली। घोड़े उछल पड़े। लुटेरों ने दूसरी गोली छूटने का इन्तजार नहीं किया। वे भाग निकले। हाँ, बिल्कुल यही हुआ था...”

ठीक इसी समय एक असली धमाके से वे दोनों चौंक पड़े। गाड़ी की रफ्तार धीमी हो गयी थी और वह हिचकोले खाती हुई चलने लगी थी।

“फिर डाकू आ गये!” सफरी घड़ी डर से चिल्ला उठी।

“अरे, नहीं। इंजन में कुछ खराबी आ गयी है। पूरी तरह खींचने से इंकार कर रहा है। हड़ताल पर जाने को तैयार है,” जेबी रेडियो हँसने लगा। कार रुक गयी। चालक बाहर निकला और गाड़ी के हुड को ऊपर उठाया।

“सम्माननीय रेडियो जी,” क्षोभ के साथ सफरी घड़ी बोल पड़ी, “चलिये हम यहीं उतर जायें। मुझे ऐसी गाड़ी में कोई दिलचस्पी नहीं जिसके घोड़े हड़ताल पर चल देते हैं। और जिसका गाड़ीवान गाड़ी चलाते समय ऊँघता रहता हो। यह घृणित है! और फिर आसपास के गँवई क्षेत्रों को आप वास्तव में सराह भी नहीं पाते—वे तेजी से जैसे उड़ते हुए गुजर जाते हैं।”

जेबी रेडियो के पास अपने संगी के पीछे-पीछे कार से उतर जाने के अलावा और कोई चारा न था। मील के पत्थर के पास खड़े-खड़े जेबी रेडियो ने सफरी घड़ी को थोड़ी दिलासा देने की कोशिश की। उसने कहा, “तुम्हें पता है, लोगों ने उड़ना भी सीख लिया है।”

“अरे!” घड़ी का चेहरा खिल उठा। “उड़ना ही तो मेरी असली खातिरदारी होगी। एक बार मुझे बग्घी की छत पर ले जाया गया था। हालाँकि वहाँ से भी दृश्य अद्भुत दिखायी पड़ रहा था। महामहिम, कृपया मुझे ऐसे किसी भले आदमी के पास ले चलिये जो उड़ना जानता हो।”

“तंग कर डाला इसने तो!” जेबी रेडियो दबी जुबान से बोला। “अब भला मैं इसके लिए उड़ान भरने वाले किसी सज्जन को कहाँ से ढूँढ़ लाऊँ?”

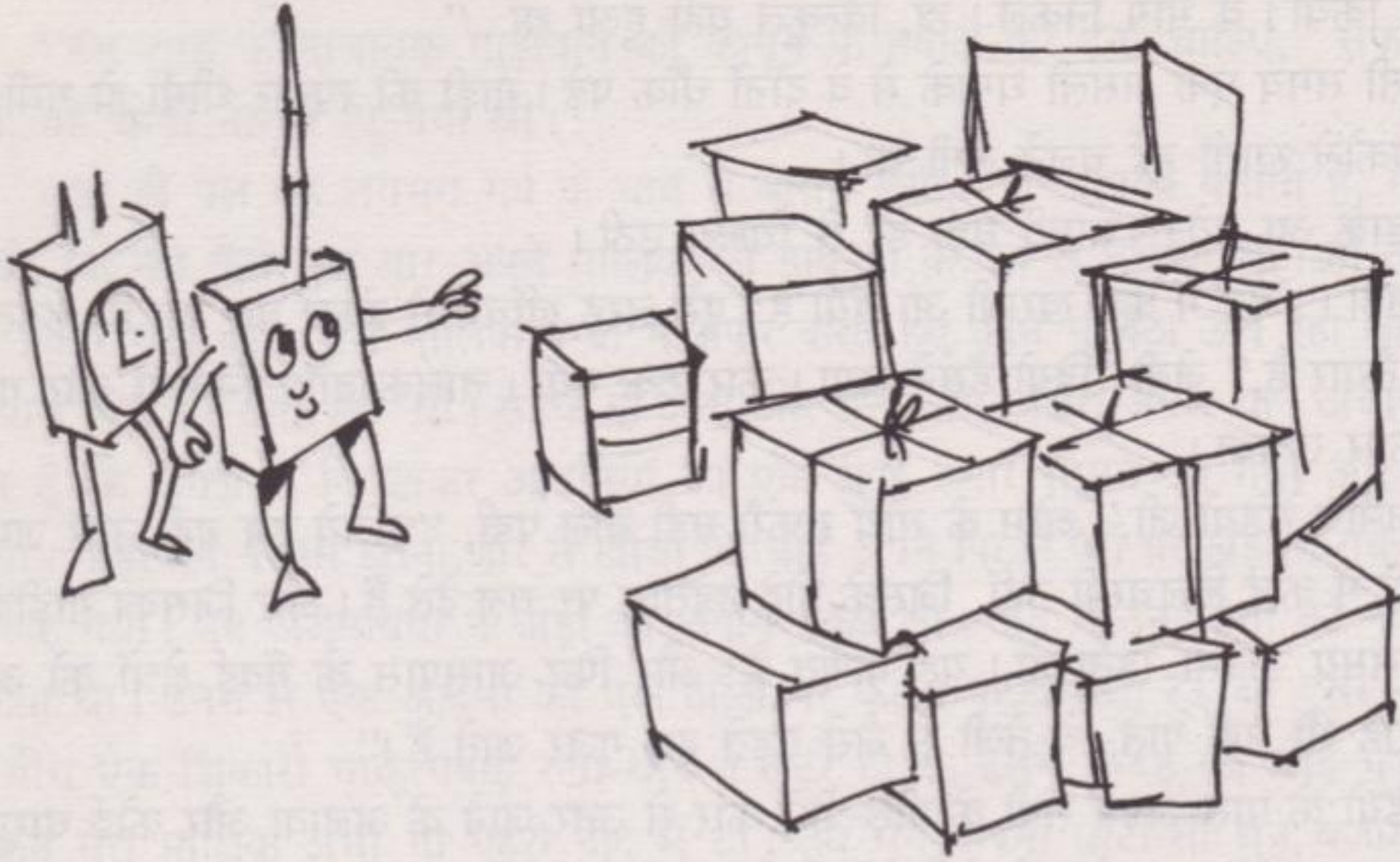
खैर, रेडियो ने अपना एरियल इधर-उधर घुमाकर ठीक किया और सुनने लगा। कुछ ही क्षणों में उसने यह सन्देश पकड़ा कि एक राकेट चाँद के लिए छूटने ही वाला है।

“आओ चलें,” जेबी रेडियो ने अपने साथी को अपने पीछे आने का इशारा किया। “मैं तुम्हें एक उड़ने वाले सज्जन के पास ले चलता हूँ।”

सफरी घड़ी ने बड़ी खुशी के साथ आदेश का पालन किया।

वे कुछ समय तक घने जंगल में चलते रहे फिर एक विशाल मैदान से होकर गुजरे और अन्त में वे एक राकेट के निचले सिरे के पास आकर खड़े हो गये। राकेट की ऊँचाई इतनी अधिक थी कि उसका ऊपरी सिरा बादलों के बीच छुप गया था। तब उन्होंने देखा कि एक लिफ्ट भनभनाती आवाज के साथ नीचे उतर रही है।

“जल्दी करो!” जेबी रेडियो चिल्लाया और वे झट से छलाँग लगाकर ऐसी जगह पहुँच गये जहाँ



डिब्बे और पेटियाँ ऊपर भेजे जाने के लिए तैयार रखी हुई थीं।

“हम इस पेटि में छिप जाते हैं!” जेबी रेडियो ने अपने साथी से कहा। सफरी घड़ी किसी तरह से ऊपर चढ़ी और पेटि के ऊपरी सिरे पर पहुँच कर गायब हो गयी। परन्तु इसके पहले की जेबी रेडियो अन्दर सरकता, दो आदमी आये और पेटि को उठाकर लिफ्ट में रख दिया। जेबी रेडियो लोहे के खम्भे के पीछे छिप गया।

लिफ्ट अपने बक्सों और पेटियों के साथ गुँजार करती आवाज में ऊपर उठ गया। और वह फिर नीचे नहीं आया। जाहिर है सभी आवश्यक चीजें राकेट में पहले ही चढ़ायी जा चुकी थीं।

जेबी रेडियो कुछ देर तक रुका रहा, और फिर दुखी मन से घर जाने के लिए लौट पड़ा। उस सफरी घड़ी को, जो यात्रा के लिए पागल था, वह पसन्द करने लगा था। फिर भी, यह अच्छी बात थी कि डिलिन-डिन सुरक्षित ढंग से राकेट पर चढ़ने में कामयाब हो गयी थी।

जेबी रेडियो को सहसा वही आवाज सुनाई दी जिसने बहुत वक्त नहीं हुआ जब मदद की गुहार लगायी थी। लेकिन अब वह आवाज कह रही थी, “आपने मेरे प्रति जो सहृदयता दिखाई उसने मेरे दिल को गहरे छू लिया है। मैं तहेदिल से आपका शुक्रिया अदा करती हूँ। यह जगह अद्भुत है! कितने दुख की बात है कि आप पीछे छूट गये। हम जल्दी ही फिर मिलेंगे मेरे दयालु मित्र।”

जेबी रेडियो जिस समय राजमार्ग की ओर मुड़ा, कान के पर्दे फाड़ देने वाली एक गड़गड़ाती

आवाज जंगलों के पीछे से सुनायी दी।

कौंधती आग्नेय सफेद पुच्छल सहित राकेट आसमान की गहराइयों में गुम हो गया।

जिस समय नन्हा रेडियो घर पहुँचा, उस समय तक वह थककर चूर हो चुका था। एक अन्तिम प्रयास कर वह किसी तरह जल निकास पाइप पर चढ़ गया और अपनी परिचित खिड़की की दहलीज पर जल्दी ही जा पहुँचा। अपने आप को उसने आराम से जमा लिया और फौरन ही गहरी नींद सो गया। सुबह के वक्त जेबी रेडियो चौंक कर जाग पड़ा। वह अन्तरिक्ष केन्द्र से घबरायी हुई आवाजें पकड़ रहा था।

वैज्ञानिक, योजनाकार और परिचालक सभी एक साथ चिल्ला रहे थे, “क्या हो रहा है यह सब? चाँद पर उतरने वाले राकेट में यह अजीब आवाज कैसी है? क्या कुछ टूट-फूट हो गयी है? हमें डिलिन-डिन, डिन-डिन की आवाज सुनाई दे रही है। अंतरिक्ष यात्री कृपया यंत्र की जाँच कर लें! और हमें सूचना दें कि उसमें क्या गड़बड़ी आ गयी है।”

एक अंतरिक्ष यात्री की प्रफुल्लित आवाज ने जवाब दिया, “सब ठीक है। और खुशमिजाज सहयात्री के लिए धन्यवाद।” लेकिन वैज्ञानिक, योजनाकार और परिचालक सभी एक समवेत स्वर में बोलने लगे—

“कौन-सा सहयात्री? क्या तुम सनक गये हो! बकवास बन्द करो! कृपया हमें रिपोर्ट करो, क्या चल रहा है वहाँ?”

एक अंतरिक्ष यात्री की शान्त आवाज ने ये ब्योरा पेश किया, “यहाँ हमारे साथ एक सफरी घड़ी मौजूद है। यह कम से कम सौ साल पुराना है। और कैसी प्यारी धुन यह बजाती है... यह मुझे अपने दादा जी के घर की याद दिला रहा है। मेरे दादा जी के पास भी एक ऐसी ही घड़ी हुआ करती थी। जब हम बच्चे थे तो इसकी धुन हर रात सुनते थे। और दादा जी हमें सोने के पहले कहानियाँ सुनाया करते थे। सुबह के समय वही धुन हमें जगाती थी...”

“वह पुरानी झक्की घड़ी ले जाने की इजाजत तुम्हें किसने दी? योजनाकार गुस्से में मुँह से झाग फेंकने लगा।

“हम इसे नहीं लाये,” जवाब आया। परन्तु इन तमाम जटिल आधुनिक यंत्रों के बीच इसका यहाँ होना हमारे लिये सभी बातों से बढ़कर है। यह सुबह हमें जिस नरमी से जगाती है वह बहुत प्यारी लगती है...जरा सोचो तो, मैं राकेट इंजीनियर सम्भवतः इसलिए बन पाया कि मेरे दादा जी ने अपनी सफरी घड़ी का रहस्य मुझे दिखाया था।”

परन्तु अन्तरिक्ष-केन्द्र में अभी भी भय का आलम था। वे उस अपराधी को ढूँढ़ रहे थे जिसने चन्द्रमा पर जाने वाले राकेट में पुराने जमाने की वह घड़ी चोरी-छिपे भेज दी थी। परन्तु वे शायद ही उसे ढूँढ़ सकें, क्यों क्या ख्याल है ढूँढ़ पायेंगे वे उसे?

सफेद बालों वाला सिर्फ एक बूढ़ा वैज्ञानिक ही आँखों में चमक भर कर कह रहा था—“अन्तरिक्ष यात्रियो, नमस्कार! मुझे उम्मीद है कि तुम यह बात भूले नहीं होगे कि उस तरह की घड़ी को दिन में एक बार चाभी देने की जरूरत पड़ती है।”

नन्हा जेबी रेडियो मुस्कुराया और मन ही मन बोला, “हाँ तो, महानुभाव, मैं यह जानने को उत्सुक हूँ कि आपको अपने नये मालिक और नया सफर कैसा लग रहा है।”





अनुराग ट्रस्ट